दिव्य भाइयों और बहनों,
ईश्वरीय आत्मिक स्नेह सहित अभिवदान,

निकट भविष्य में आने वाली दैवी दुनिया के द्वार खोलने की कुंजी के रूप में 6 शक्तिशाली सार युक्त संकलन भेज रहा हूँ जो ज्ञान का सार अथवा ज्ञान के बीज शब्द हैं । यह ५ विकार रुपी आसुरी सेनाओं को ध्वस्त करने के लिए रूहानी मिसाइल का कार्य करेगा जिसने आधा कल्प (५००० वर्ष) से पूरे विश्व पर कब्ज़ा कर सारे मनुष्य आत्माओं को अपना गुलाम बना दिया है ।
शब्दों में शक्ति है । शब्द अर्थ, समझ व कार्य को दर्शाता है । एक शब्द हमारे जीवन में जहान के अर्थ ला सकता है , संबंधों को बनाने में सहायक या बिगाड़ने के निमित्त बन सकता है। एक विचार या शब्द स्वर्ग या नरक बनाने में काफी है।

मूल्य ABC एवं सकारात्मक वर्णमाला :

मूल्य एबीसी दिव्य गुणों एवं मूल्यों का संकलन है जो मोटे शब्दों में है जिसमें सकारात्मक शब्द निहित है । आत्मा के सात गुण (नीले रंग में), अष्ट शक्तियां (लाल रंग में) व सोलह कलाएं (हरे रंग में) समाहित हैं । यह विश्व की आत्माओं को अंतर्यात्रा द्वारा स्वयं के पुनर्निर्माण व दैवी मूल्यों व दैवी गुणों पर आधारित चरित्र विकास की स्मृति दिलायेगा जो सतयुगी देवी देवताओं में स्वाभाविक रूप से विद्यमान थे ।

हिन्दी सकारात्मक वर्णमाला यह मुरली अर्थात ईश्वरीय महावाक्यों के मुख्य सकारात्मक शब्दों का संकलन है जो सकारात्मक विचार द्वारा शक्तिशाली वातावरण का निर्माण करेगा क्योंकि हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं । जीवन के सुख हमारे विचारों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है । हमारे विचार हमारी भावना बनते हैं , हमारी भावनाएं वृत्ति बनते हैं , हमारी वृत्तियाँ बोल व कृति बनते हैं , हमारी कृति आदत या धारणाएं बनते हैं और अंत में हमारे चरित्र हमारे भाग्य का निर्माण करती हैं । ध्यान रहे हम जो सोचते हैं वह बनते हैं, हम जो महसूस करते हैं उसे आकर्षित करते हैं और हम जो कल्पना करते हैं उसे साकार करते हैं । हमारे विचार भावनाओं व शब्दों का प्रकृति व वातावरण पर प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है अतः अपने मन को सही और सकारात्मक विचारों भावनाओं एवं शब्दों का भोजन दें ताकि उसकी पुनःप्राप्ती एवं अनुभूति हो सके । हम अपने मन को दुःख व तनावों से पोषण करने पर ख़ुशी व शांतिपूर्ण क्षणों की उम्मीद नहीं कर सकते हैं ।

मुझे एक उदहारण स्मरण आता है । एक छोटे बालक को जब गुरु ने मंत्र दोहराने को कहा तो उसने **ABCD ... Z** तक कह दिया और जब कारण पूछा गया तो उस

बालक ने कहा सभी मंत्र इन अक्षरों के ही तो संकलन हैं । इस तरह नीव निर्माण में बीज शब्द की शक्ति होती है ।

शब्दों का स्तोत्र आत्मा है इसलिए उसे शब्दों का जनक कह सकते हैं और निराकार परमपिता शिव परमात्मा जो की ज्ञान के बीज हैं, सर्व आत्माओं के पिता व रचनाओं (प्रकृति) के रचयिता हैं, परम शिक्षक व ज्ञान का सागर होने के नाते, वे हमें इस सृष्टि नाटक के अंत में (वर्तमान समय) सभी वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों का सार सुनाते हैं । वे ही सच्चा गीता ज्ञान दाता हैं । वे सर्व गुणों के भंडार हैं । इसलिए हमें आनेवाली दैवीय दुनिया के लिए दिव्य मूल्य व दैवी गुण धारण कराते हैं । सर्व का परमपिता होने के नाते हमें पवित्रता, सुख, शांति का स्वर्गीय अधिकार देते हैं और अंत में सतगुरु का पार्ट बजाते हुए हमें अपने वास्तविक निवास स्थान परमधाम अथवा मुक्तिधाम ले जाने के लिए मार्गदर्शन करते हैं ।

सतयुग और त्रेतायुग में मन व वाणी याने विचार व शब्द सकारात्मक होते हैं इसलिए वहां सत्यता, पवित्रता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता इत्यादि दैवीगुणों के साथ सुख, शांति, आपसी सौहार्द (प्रेम) रहता है । आत्मा सर्व कला संपूर्ण, सर्वगुण संपन्न, आत्मअभिमानी, प्रफुल्लित व शक्तिशाली रहती है । विचारों में भी एकमत सकारात्मकता होने से प्रकृति भी सतोप्रधन, आज्ञाकारी एवं सुखदायी रहती है क्योंकि जैसे पहले वर्णन कर चुके हैं कि प्रकृति का मनुष्य आत्माओं के विचारों भावनाओं व शब्दों का सीधा कनेक्शन (सम्बन्ध) है । संकल्प पवित्र व श्रेष्ठ होने से वहां कोई स्थूल सुक्ष्म हिंसक प्रवृत्ति नहीं होती क्योंकि विकार ही नहीं होते । एक धर्म के बल पर मूल्यों पर आधारित दैवी गुणों वाले पूज्य देवी देवतायें राज्य करते हैं जिन्हें पुण्य आत्मा के रूप में आज भी पूजन करते हैं ।

द्वापर और कलियुग में मूल पढाई में प्रकृति (५ तत्व) के शब्दों का समावेश होने से, शिक्षा पद्धति में दिव्यता और सकारात्मकता में कमतरता आने लगी ।

आज के संसार की पढाई दैहिक व भौतिक जगत की पढाई है जो मुख्यतः विनाशी देह, भौतिक जगत व भौतिक विज्ञान पर केन्द्रित है । मूल पढाई के तहत छोटे बच्चों को अ से आम इ से इमली उ से उल्लू इत्यादि सीखाये जाते हैं किन्तु हमारे विचारों में सकारात्मकता व दिव्यता की कमी के कारण शब्द भी नकारात्मकता वा भौतिकता की ओर मुड़ते गए, साइलेंस की शक्ति वा आत्मशक्ति की जगह साइंस (विज्ञान) ने प्रवेश किया इसलिए प्रकृति भी झूठखंड, तमोप्रधान, दुःख दायी होती गयी । आज अंतिम युग याने कलियुग में संसार में असत्यता, दुःख, अशांति , भय, हिंसा, भ्रष्टाचार, पापाचार की अति वृद्धि हो गयी है । आज के लौकिक मात पिता ज्यादा से ज्यादा जोर भौतिक जगत की पढाई पर दे रहे हैं । वे अज्ञानता वश अपने बच्चों को मूल्यों पर आधारित शिक्षा न देकर भौतिक विज्ञान द्वारा विकारी दुनिया नरक के द्वार खोलते हैं इसलिय आज सारी दुनिया नकारात्मक- विनाशात्मक प्रवृत्ति व भौतिक विज्ञान की पढाई से महाविनाश के

कगार पर आ पहुंची है जबकि ज्ञानसागर रूहानी परमात्मा पिता आत्मिक पढाई पर जोर देते हैं । वे साकारात्मक-रचनात्मक प्रवृत्ति व आध्यात्मिक विज्ञान द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करते हैं व पतित, कनिष्ठ, भ्रष्टाचारी मनुष्यों को ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग की पढाई द्वारा पावन श्रेष्टाचारी सर्वोच देवपद की प्राप्ति कराते हैं याने ईश्वरीय ज्ञान के सकारात्मक शब्द पढ़ाकर आध्यात्मिक विज्ञान द्वारा निर्विकारी स्वर्गीय दुनिया के द्वार खोलते हैं ।

अभी आत्मिक पढाई से ही स्व उन्नति व विश्व उन्नति होगी इसलिए हमें परमपिता परमात्मा से जुड़कर नकारात्मक को सकारात्मक में परिवर्तन करना है । जैसे अ से अविनाशी, आ से आत्मा, ई से ईश्वर, इन सकारात्मक शब्दों की पढाई को माता पिता, टीचर, अपने जीवन में धारण कर अपने बच्चे व स्टूडेंट को भी धारण कराये तो संसार में पुनः स्वर्णिम युग याने रामराज्य की स्थापना कर सकेंगे जिससे यह संसार नरक से बदल स्वर्ग बन जायेगा ।

यदि मूल्य ABC एवं सकारात्मक वर्णमाला को पर्चे में रूपांतरित कर दिया जाए तो यह अपने तरह का आनोखा होगा जिसमें बच्चों व विद्यार्थियो के लिए मूलभूत मूल्यों की शिक्षा एवं शक्तिशाली सकारात्मक शव्दों के साथ साथ मानव आत्माओं के हितार्थ ईश्वरीय सन्देश भी समाहित होगा ।

सृष्टि खेल :

यह ईश्वरीय महावाक्यों के शब्दों का संकलन है । यह सृष्टि चक्र या अविनाशी सृष्टि नाटक का सार है जो विपरीत व पुनरावृत्ति का खेल है ।

स्वयं से पूछे :

ये महत्वपूर्ण प्रश्नों के समूह हैं जिन्हें स्वयं से पूछनी चाहिए जिससे हमारी अंतरयात्रा की शुरुआत हो, स्वानुभूति से परमात्म अनुभूति की ओर अग्रसर होवें। इन प्रश्नों का निरन्तर मंथन करने से मूलभूत प्रश्न " मैं कौन हूँ के साथ आत्मा परिचय ,आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध, आत्मा के कर्म, आत्मा के वास्तविक निवास स्थान, आत्मा के असली गुण व गन्तव्य स्थान का उत्तर प्राप्त कराएगा ।

शक्तिशाली तीन शब्द रहस्य :

यह शक्तिशाली तीन शब्द रहस्य मुरलीयों व क्लासेज से संकलित शक्तिशाली ३ शब्दों के समूह हैं जिनमें गहरे अर्थपूर्ण सार सन्निहित है । इन सारयुक्त शब्दों को बारम्बार मंथन करने से इसमें छिपे रहस्य प्रकट होंगे जिससे यह समूचे ज्ञान को फिर से तरोताज़ा करने के साथ अधिक लाभ भी दिलाएगा ।

ज्ञान सार :

यह ज्ञान सार साकार अव्यक्त मुरलीयों (ईश्वरीय महावाक्यों) से चुनी गयी है । यह सहज १-२ शब्द या वाक्य हैं जो परमपिता परमात्मा द्वारा पुरुषात्तम संगमयुग पर उच्चारे गए विस्तृत ज्ञान के सारांश हैं जो समझने व व्यवहार में लाने में सहज है । इन शब्दों अथवा वाक्यों को बारम्बार मंथन करने से मन को मुख्य ध्येय की ओर केंद्रित करने व पुरुषार्थ की तीव्रता को बढ़ाने में मदद मिलेगी ।

ईश्वरीय याद का आधार स्नेह है । अगर प्यार में कमी है तो याद भी एकरस नहीं हो सकता है और यदि याद एकरस नहीं तो स्नेह भी नहीं प्राप्त हो सकता । इस प्रकार जहाँ स्नेह है वहां शांति है, जहाँ पवित्रता नहीं वहां स्नेह उत्पन्न नहीं हो सकता ।

इसलिए स्वर्गीय दुनिया का ईश्वरीय अधिकार प्राप्त करने के लिए स्वयं को रूहानी पिता की रूहानी संतान समझ विकारी असुरी संस्कारों को समाप्त कर दैवी मूल्यों व गुणों को धारण करते हुए आत्मा की कला को बढ़ाये । यह पुरुषार्थ स्वतः ही दैवी विश्व राज्याधिकारी बनने के योग्य बनायेगा ।

यदि इन संकलनों से आपकी आत्मा तृप्त हुई तो निराकार परमपिता शिव परमात्मा जिन्हें प्यार से शिवबाबा कहते हैं उन्हें बड़ा धन्यवाद देना और उनके इन सकारात्मक शब्दों / वाक्यों को सारे विश्व की आत्माओं तक पहुँचाने में सहयोगी बनें जिससे नयी आत्माएं भी इस सारयुक्त, शक्तिशाली ज्ञान जल की बूंदों के माध्यम से तृप्त हो अपना ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें व नयी दुनिया की स्थापना का कार्य जल्द से जल्द संपन्न हो सके ।

परमात्मा पिता से अपना स्वर्गीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें
अभी नहीं तो कभी नहीं ।

सर्वोच, परमप्रिय, मीठे ते मीठे परमात्म पिता को समर्पित,

ईश्वरीय सेवा में,
बी के अनिल कुमार (pathakau71@gmail.com)

Just as the letters of alphabet form words and these words unite to give meaningful sentences. Like wise the values form our character to give a meaningful life . Hence it is well said if money is lost nothing is lost, if health is lost something is lost and if character is lost everything is lost.

VALUES-ABC

A	Accuracy, Appreciation, **Accommodation** *Art of Administration, Art of Absorbence*	**Accuracy** is doing the right thing at right place and at the right time. To experience constant progress one must learn to **appreciate** what one has than what one doesn't have. **Accommodation power** like an ocean.
B	Boldness, Bearing, Balance, **Bliss**	Be **bold** to with stand the pressures of life and **bear** the sufferings with joy. To be **balanced** is to have the ability to do the right thing at the right time, to use the head and the heart at the same time.
C	**Co-operation**, Cheerfulness, Contentment, Courage, Coolness, Confidence, Charity, Cleanliness, Compassion *Art of changing Waste into Best.*	**Co-operation power** is built on caring and sharing. **Cheerfulness is the evidence, Contentment is the experience, Courage is the heart and Coolness is the embodiment of all values. Confidence** is the first step towards success. When you see virtues rather than weakness in people that is **Compassion.**
D	Dynamic, Discipline, Detachment, Determination, **Discrimination** *Art of Divine behaviour*	**Discipline** strengthens and enhances your creative abilities. **Detachment** brings emotional safety, realism and refreshment. **Determination is the key to imbibe values. Discrimination power** like a jeweler.
E	Enthusiasm, Easiness *Art of Entertainment*	**Enthusiasm** makes difficult things easy. Positive thinking and attitude helps in maintaining the enthusiasm. **Easiness brings all values.**
F	Faith, Fearlessness, Freedom, Farsightedness, Flexibility, Forgiveness, **Face**	**The best security is Faith. Faith is the crown of all values. Fearlessness** is to remain true to myself. By remembering God, one can become fearless. True **Freedom** is freedom from vices. When you bless and uplift someone even as they defame you, that is **Forgiveness. Facing power** during upheavals and adversities.
G	Generosity, Gentleness, Gratitude	**Generosity** means more than just giving. It also means to co-operate with others. The greatest act of generosity is to see beyond the weaknesses and mistakes of others, having good wishes for them & helping them to recognize their innate value.
H	Humility, Harmony, Honesty, Hope, **Happiness**, *Art of keeping Healthy*	**The best ornament is Humility. Humility is the fragrance & Honesty is the guru of all values. Humility** is the ability to understand & give others. To focus not only on self but others too brings humility. **Humility** brings willingness to learn. **Honesty** doesn't mean just speaking the truth but also being clear with oneself, then it naturally brings clarity about one's own capabilities. **Happiness** raises the spirit of whoever possesses it, and brings out a smile in others. It's a journey not a destination.
I	Introspection, Introvertness	**Introspection** is a mirror to cleanse the soul. **Introvertness is the path to divine virtues.**
J	Joy, **Judge**	**Joy** is the food of the soul. Never leave joy even if you have to leave everything. **Judgement power** to judge one's own thought, words, actions & to take correct and quick decision.
K	**Knowledge**, Kindness	**Knowledge is the source of income.** When you extend pure love to everyone with selfless motivation that is **kindness.**
L	**Love**, Lawful, Lightness, *Art of Learning, Art of Leadership*	**Love is the queen of all values.** Love is the strength that gives you life. When you receive love you lose fear and you can give the best in you. Keep balance between **Love and Law.**
M	Morale , Maturity , Mercy *Art of marching ahead & making others*	Life without **morale** is useless. **Maturity is the protector of all values.** When you send good wishes and pure feelings to those who are in deep sorrow that is **Mercy**.
N	Neutral,	Be **neutral** in sorrow & happiness, loss & gain, fame & defame.
O	Obedience, *Art of making others Own*	Be **obedient** to Parents, Teacher and Satguru
P	Patience, **Purity, Peace, Power Pack-Up**	**The best weapon is Patience. Patience is the fortress of all values. Patience** teaches you not to push, but rather to wait and appreciate the game of life, knowing that nothing remains the same and everything will change at some point. **Purity is the mother of all values. Peace is the king of all values. Power to pack up** all waste thoughts & attachments.
Q	Quality	**Divine qualities** create fragrance in life.
R	Respect, Royalty, Responsibility, Reflection, Renunciation *Art of Relaxation*	**Respect is the demonstration of values. Respect** means acceptance of the fact that we are all different and unique and at the same time, we all have something important and valuable to share. The only way of receiving respect is to give it first. **Royalty** is being noble in behaviors and mannerisms. Each one is **responsible** for the betterment & upliftment of the self, society & the World. **Renunciation is the decoration of all values.**

S	Sacrifice, Sweetness, Self-confidence, Simplicity, Stability, Solidarity, Sharing *Art of Sweet Talking, Art of Sustenance*	**Simple** living and high thinking, **Sacrifice** brings sweetness & success in life. **Sweetness is the taste and Stability is the bridge of all values. Simplicity is the beauty of all values.**
T	Truth, Trustee, Tirelessness, Trust, **Tolerance** *Art of Teaching, Art of Transformation*	**Truth is the foundation of all values. Tolerance power** is the throne of all values. One must be tolerant like trees & earth. To consider ourselves as a **trustee** of God is to appreciate what is happening, knowing that God is responsible. It also means that we need to be a valuable instrument and do our bit well. When we make full effort handing over the responsibility to God, we are able to do our best using all the available resources. Yet, we don't experience the burden of the situation. One must be **tireless** till the final goal is reached.
U	Unity	**Unity** is harmony within and amongst people. We belong to one God Family.
V	Valour, Veracity , **Virtues, Values**	**Values are the foundation of a better and peaceful world**
W	Wisdom, **Withdraw** *Art of Writing,*	**The best wealth is Wisdom. Wisdom** is a light that guides path in the darkness of ignorance. When & how to use intelligence is wisdom. **Withdrawal power** like a tortoise i.e. withdrawing the senses and divert it internally.
X	Xenial (Hospitality)	**Hospitality** is the best service to create first impression over our guests. It reflects our way of living, culture and inherent qualities
Y	Youthful	**Youth** can contribute in the creation of a better world.
Z	Zeal	**Zeal** enhances your progress

WORDLY GOD MESSAGE

Supreme soul God Father Shiva is the source of all *divine values* and ocean of *divine virtues*. These values and divine virtues form the basis of the new golden aged world. The repetitive world cycle of **5000** years comprising of Satyug, Tretayug, Dwaparyug & Kaligyug is **nearing its end**. At the juncture of this **world transformation** when the **old vicious kaliyug world** is changing to **new viceless Satyug world**, Supreme God Father has **incarnated** from soul world in an ordinary human form of **Prajapita Brahma** to relieve the souls from **sins** *and clutches* of **five vices** (Lust, Anger, Greed, Attachment, Ego) and *imbibe* **divine virtues** through Spiritual Godly knowledge (**True Gita knowledge**) & Easy Rajyoga for re-establishing a **better clean and highly developed deity culture** with **100% purity, peace & happiness**. Even today this lost ancient culture has been depicted in the history as Satyuga, Krityuga, Golden age, Dwarka, Heaven, Vaikuntha, Ramrajya, Bahist, Garden of Allah, Paradise, Land of Kemet or Atlantis.

Supreme soul is the **incorporeal father** of all souls who impart *heavenly birthright* to his **soul children** that has become weak, unrest, sorrowful after undergoing the **84 birth** life cycle. So by this **God fatherly relation** we are soul brothers, resident of the soul world irrespective of any **religion or state** and deserve *equal birth right* over the heavenly property (inheritance) of the spiritual father.

He is the **Supreme teacher** who delivers real spiritual knowledge about the spirit and creation which cannot be given by any human beings.

He is the **Supreme satguru** (preceptor), the **bestower of Salvation** who relieves souls from sorrow, pain, restlessness & guide the way to the real abode - **the soul world.** No human beings can bestow salvation other than him. He alone opens the gate of *soul world (Mukti) & Heavenly world (Jeevan mukti).*

ORDINANCE OF SUPREME GOD FATHER

God Shiva says:

Forget all bodily religion and relations. Realise self as **soul** and remember the point light form **Supreme soul**, the supreme source to *destroy* your sins, to *energise* and *purify* your souls thus attaining **Mukti** (Liberation) & **Jeevan mukti** (Liberation in life - heaven). Now is the time to **return** to the original home - soul world.

REALISE SPIRITUAL GOD FATHER AND HAVE YOUR GOD FATHERLY BIRTH RIGHT BEFORE THE DRASTIC WORLD CHANGE. NOW OR NEVER . AVOID REPENTENCE FOR EVER.

Soul qualities Divine values & virtues 8 Powers 16 Celestial arts

Word is Power. Creation is the outcome of words. Spread these **powerful positive words** of godly versions, **divine values & virtues**, 7 qualities of a soul and it's 16 celestial arts and co-operate in the creation of **new heavenly deity world** in near future.

KNOW THY SELF, REALISE GOD. CHANGE THE SELF, CHANGE THE WORLD.

सकारात्मक - वर्णमाला

● आत्मा के 7 गुण ● मूल्य व दैवी गुण ● अष्ट शक्तियाँ ● 16 कलाएँ

अ	अनादि, अव्यक्त, अविनाशी, अल्फ-अल्लाह, अकालमूर्त्त, अलौकिक, अवतार, अमृतवेला, अटेन्शन, **अहिंसा,अंतर्मुखता,अनुःशासन, अथक,** अभ्यास, **अचल, अडोल,** अतीन्द्रिय,**अष्टशक्ति**
आ	आत्मा, **आत्मविश्वास, आनंद, आधारमूर्त, आज्ञाकारी, आदर,** आराम करने की कला, आगे बढ़ने व बढ़ाने की कला
इ	इष्ट, इच्छा, इज्जत, इशारा
ई	ईश्वर, ईमानदार
उ	**उपराम, उपकार, उदारता, उद्धारमूर्त,** उड़ना, उत्थान, उन्नति, **उमंग, उत्साह**
ऊ	ऊपर, ऊँचा
ए	**एकमत, एकता, एकांतप्रिय,** एकनामी, एकाग्रता, एकरस, एवररेडी
ओ	ओंम शांति, ओजस्वी
क	कुमार, कमाल, कर्मयोगी, कर्मातीत, कुदरत, कायदा, करावनहार, **करूणा, कल्याणकारी,** कमाई काम्याबी
ख	खुदा, खिदमत, खूबी, खुशी, खजाना, खुशनसीब
ग	गॉडली स्टूडेन्ट, **गंभीरता, गुणग्राहकता,** गीताज्ञान, गुलदस्ता
घ	घर, घराना
च	चैतन्य, चरित्र, चिंतन, चक्रवर्ती, चतुर्भुज, चुस्त, चढ़ना
छ	छत्रछाया, छठातत्व
ज	जीवन, **जोड़ना, जवाबदारी**
झ	झलक, झोली, झेलना, झूलना

ट	टाइम, ट्रस्टी, टिकना, टपकना
ठ	ठहरना
ड	ड्रामा, डबल लाईट
ढ	ढ़ाढ़स, ढ़ाल
त	ताज, तख्त, तिलक, त्याग, तपस्या, तेजस्वी, तीव्रता
थ	थिरकना, थमाना
द	देवता, दातापन, दिव्यता, दैवीगुण, दयालु, दिलदार, दूरदर्शिता, दृढ़ता, दृष्टि, दुआयें, दीपक, दीपराज, दैवीय व्यवहार करने की कला, दूसरों को अपना बनाने की कला
ध	धर्म, धारणा, धैर्यता, धन
न	नम्बरवन, न्यारापन, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, निष्काम, नष्टोमोहा, निमित्त, निमार्ण, नम्रता नियमितता, निर्मलता, नथिंग न्यु, निर्भयता, निश्चिंतता, नशा, निर्णयशक्ति, नेतृत्व करने की कला
प	परमपूज्य, प्यारा, पतितपावन, परमपिता, परमात्मा, परमधाम, प्रकाश, पुरूषार्थ, पुरूषोत्तम पार्टधारी, पवित्रता, प्रेम, प्रसन्नता, परोपकार, परिवार, पालना, परखशक्ति, प्रशासन करने की कला,परिवर्तन कला, पालना करने की कला
फ	फर्ज, फरिश्ता, फ्राकदिल, फुलस्टॉप
ब	बाबा, बच्चे, ब्रह्मा, बेफिक्र, बे-बादशाही, बलवान, बहादुर, बेहद, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण, ब्रह्मलोक, बुद्धि, बैलेन्स, बच्चे,बलिहार, बहिश्त
भ	भगवान, भाग्य, भाग्यवान, भ्रातृत्व भावना
म	मन्मनाभव, मध्याजीभव, महादानी, मददगार, महान, मूल्यवान, मोहब्बत, मिलनसार, मधुरता, मीठा, मन,मौन, मुक्ति, महावीर, मर्यादा, महाराजन, मधुर बोलने की कला, मनोरंजन कला
य	याद, यात्रा, यथार्थता, यादगार, योगयुक्त, युक्तियुक्त, यशस्वी
र	रामराज्य, रचयिता, रचना, रहमदिल, रूहानियत, रायल्टी, रमणीकता, रत्न,रूद्र, राजऋषि, राजयोग
ल	लव, लवलीन, लाडले, लक्ष्य, लगन, लिखने की कला
व	विष्णु, वायदा, विश्वास, वफादार, वैराग्य, विदेही, विकर्माजीत, विजयी, वारिस, वर्सा, वाह वाह, व्यर्थ को समर्थ करने की कला
श	शिव, शंकर, शुभभावना, शुभकामना, शुभचिंतक, शांति, शक्ति, शीतलता, शालीनता, शुक्रिया

स	सर्वशक्तिमान, सतयुग, **सोलह कला**, संस्कार, **सत्यता**, सुख, सकारात्मक, **सहनशक्ति, सहयोगशक्ति सामनाशक्ति, समाने की शक्ति, संकीर्ण शक्ति, समेटने की शक्ति, सरलता, स्वच्छता सभ्यता, संतुष्टता**, संगमयुग, सालिग्राम, सन्यास, स्वरूप, स्वदर्शन, स्वचिंतन, स्वमान, स्मृति, **साहस**, समर्थ, स्वस्थिति, साक्षी, **स्थिरता, सादगी, समदृष्टि,सहनशीलता, समर्पणता**, सफलता,सपूत सकाश, सहारा, सार, **सीखने की कला, सिखाने की कला, समाने की कला, स्वस्थ्य रहने की कला**
ह	हॉजी, हिम्मतवान, **हल्का, हर्षितमुखता**, हीरो
क्ष	**क्षमा**, क्षमता, क्षत्रिय, क्षीरसागर, क्षणभंगुर
त्र	त्रेतायुग, त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ
ज्ञ	**ज्ञान**, ज्ञानसूर्य

वैश्विक ईश्वरीय संदेश

परमपिता शिव परमात्मा सभी *दिव्य मूल्यों* के स्तोत्र व *दिव्य गुणों* के सागर हैं। यही मूल्य एवं दिव्य गुण आने वाली सतयुगी सृष्टि की आधारशीला है। **5000** हजार वर्ष की पुनरावृत्तीय सृष्टि चक्र जो चार युगों (**सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग**) से बना है अब अपने **अंतिम पड़ाव** पर है।

विश्व महापरिवर्तन की इस अंतिम वेला में जब पुरानी **विकारी कलियुगी दुनिया** नई **निर्विकारी सतयुगी दुनिया** में रूपांतरित हो रही है **परमपिता परमात्मा** परमधाम से **प्रजापिता ब्रह्मा** के साधारण मानवीय तन में **अवतरित** हो रूहानी ईश्वरीय ज्ञान **(सच्चा गीता ज्ञान)** एवं सहज राजयोग द्वारा आत्माओं को पावन बनाकर **पाप व पॉच विकारों (काम,क्रोध, लोभ,मोह,अहंकार)** के चंगुल से मुक्त कर **दैवी गुणों की धारणा** करा रहे हैं जिससे अति **स्वच्छ एवं उन्नत 100 प्रतिशत** पवित्रता सुख शांति संपन्न **दैवी सभ्यता** का पुनर्निर्माण हो सके। आज भी इतिहास में इस विलुप्त प्राचीन सभ्यता का सतयुग, कृतयुग,स्वर्णिम युग, द्वारका, स्वर्ग, वैकुण्ठ, रामराज्य, बहिश्त, अल्लाह का बगीचा, पैराडाइज, एटलांटिस इत्यादि नामों से वर्णन प्राप्त होता है।

परमात्मा सर्व आत्माओं के **निराकार परमपिता** हैं जो अपने **आत्मा रूपी बच्चों** को *स्वर्गीय राज्य अधिकार* देने के लिए अवतरित होते हैं जब सभी **84 जन्मों** के चक्र को भोग कर अशक्त अशांत व दुःखी हो जाते हैं। इस **ईश्वरीय नाते** से हम **परमधाम निवासी** पार्टधारी आत्मायें **भाई भाई** हुए। चाहे हम किसी भी **धर्म वा प्रांत** के हों सभी का परमपिता के **स्वर्गीय मिलकियत** पर *समान अधिकार* है।

वे **परमशिक्षक** हैं जो रचयिता और रचना का सच्चा ज्ञान देते हैं जो कोई भी मनुष्य आत्मा दे न सके।

वे **परमसद्गुरू** एवं **सद्गति दाता** हैं । सर्व आत्माओं को दुःख अशांति पीड़ाओं से मुक्त कर वास्तविक निवास **परमधाम** में प्रस्थान करने का मार्ग दिखलाते हैं। उनके सिवाय कोई मनुष्य सद्गति दे न सके। वे स्वयं ही *मुक्ति व जीवनमुक्तिधाम (स्वर्ग)* के द्वार खोलते हैं।

रूहानी परमपिता शिव का फरमान	देह सहित देह के सभी धर्म एवं संबंधों को भूल अपने को **आत्मा (रूह)** समझ मुझ **बिंदुस्वरूप परमात्मा** परमरूह परमस्तोत्र को याद करने से तुम्हारे *पाप नष्ट* होकर तुम *ऊर्जावान पावन* बन जायेंगे व **मुक्ति जीवन मुक्ति** को प्राप्त करेंगे। अभी अपने असली घर मुक्तिधाम **लौटने** का समय है।

विश्व महापरिवर्तन के पहले अपने रूहानी परमात्म पिता को पहचान उनसे अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें। **अभी नहीं तो कभी नहीं**। फिर ना कहना जताया नहीं।

शब्दों में शक्ति है। शब्दों द्वारा ही प्रकृति का निमार्ण होता है। ईश्वरीय महावाक्यों के **शब्द,** आत्मा के **7 गुण, मूल्यों एवं दैवी गुणों,** अष्टशक्तियॉ व **16** कलाओं पर आधारित इन **सकारात्मक शब्दों** को विश्व में फैलाकर भविष्य **नई स्वर्गीय दैवी दुनिया** की स्थापना में सहयोगी बनें।

स्वयं को जानो व ईश्वर को पहचानो। स्वयं बदलो तो जग बदलेगा ।

सृष्टि खेल	WORLD PLAY
HINDI	**ENGLISH**
यह सृष्टि चक्र **5 हजार वर्ष** का कर्मों के हिसाब का कल्प कल्प का अनादि बना बनाया खेल है ।	The world drama wheel is a **5000 years** eternal predestined play of karmic account repeating every cycle comprising of:
1 आने और जाने का	1. Arrival and departure
2 आज और कल का	2. Today and Tomorrow
3 आत्मा और जीव का	3. Soul and Body
4 आधा जीवनमक्ति आधा जीवनबंध का	4. Half Liberation in life and Half Bondage in life
5 भारत की हार और भारत की जीत का	5. Bharat's (India) defeat and Bharat's victory
6 भ्रष्टाचारी से श्रेष्टाचारी श्रेष्टाचारी से भ्रष्टाचारी बनने का	6. Unrighteous to Righteous and Righteous to Unrighteous
7 भूल – अभूल का	7. Mistake -Perfection
8 भूल भूलैया का	8. Mistake and Illusion
9 कब्रिस्तान – परिस्तान का	9. Graveyard - Paradise
10 दुर्गति– सद्गति का	10. Misery - Salvation
11 ईश्वरीय संप्रदाय – आसुरी संप्रदाय का	11. Godly community - Devil community
12 पास्ट प्रेजन्ट और फ्युचर का	12. Past Present and Future
13 ज्ञान – भक्ति का	13. Knowledge - devotion
14 ज्ञान भक्ति वैराग्य का	14. Knowledge, Devotion and Renunciation
15 गिरने (उतरने) और चढ़ने का	15. Fall and Rise
16 हार – जीत का	16. Defeat - Victory

सृष्टि खेल		WORLD PLAY
HINDI		ENGLISH
17 ईश्वरीय राज्य और आसुरी राज्य का		17.Godly kingdom and Devil kingdom
18 जड़ और चैतन्य का		18. Inconscient and Conscient
19 प्रभु और माया का		19. Prabhu (Lord) and Maya (Illusion)
20 पाक – नापाक का		20. Holy - Unholy
21 पूज्य – पुजारी का		21. Worshipworthy - Worshipper
22 प्रिन्स बेगर बनने का		22. Becoming Prince and Beggar
23 प्रकाश – अंधियारे का		23.Light - Dark
24 पवित्र – अपवित्र का		24. Pure - Impure
25 पावन से पतित पतित से पावन बनने का		25. Pure to Impure and Impure to Pure
26 रात और दिन का		26. Night and Day
27 राम और रावण का		27. Ram and Rawan
28 राम राज्य और रावण राज्य का		28. Ram kingdom and Rawan kingdom
29 राज्य लेने और गॅवाने का		29. Acquiring kingdom and Loosing kingdom
30 स्मृति– विस्मृति का		30. Remembrance - Forgetfulness
31 सचखण्ड – झूठखण्ड का		31.True Land - False land
32 शिवालय – वेश्यालय का		32. Shivalaya (Shiva's abode/temple) - Vaishyalaya (brothel)
33 शांति – अशांति का		33. Peace - Unpeace
34 सुख – दुःख का		34. Joy - Sorrow
35 श्याम सुंदर बनने का		35. To become Ugly and Beautiful
36 सुबह अमीर शाम फकीर बनने का		36. Morning rich and Evening beggar

सृष्टि खेल		WORLD PLAY
HINDI		ENGLISH
37 साल्वेन्ट इन्साल्वेन्ट बनने का		37. Becoming Solvent and Insolvent
38 समझदार और बेसमझ का		38. Wise and Fool
39 सतोप्रधान – तमोप्रधान का		39. Completely pure - Completely impure
40 उत्थान और पतन का		40. Rise and Fall
41 वर्सा – श्राप का		41. Inheritance - Curse

स्वयं से पूछे

1 प्रश्न	मैं कौन
2 प्रश्न	मैं कौन
	मेरा कौन
3 प्रश्न	मैं कौन
	मेरा कौन
	मुझे क्या करना है
4 प्रश्न	मैं कौन हूँ
	मैं किसकी हूँ
	मैं कहाँ से आई हूँ
	मेरे कर्तव्य क्या है
5 प्रश्न	मैं कौन हूँ
	मेरा स्वरूप क्या है
	मेरे गुण कौन से हैं
	मेरे कर्म क्या हैं
	मैं कहाँ से आया हूँ

शक्तिशाली 3 शब्द रहस्य	POWERFUL 3 WORD SECRET
1 आत्मा परमात्मा प्रकृति (तीन का खेल)	1. Soul, Supreme Soul, Nature (Play of 3)
2 बीज (परमात्मा) पत्ता (आत्मा) झाड़ (सृष्टि) (कल्पवृक्ष के 3 भाग)	2. Seed (Supreme soul), Leaf (Soul), Tree (World) (3 parts of Genealogical tree)
3 आदि मध्य अंत (तीन काल) भूत वर्तमान भविष्य	3. Beginning, Middle, End Past Present Future (3 aspects of Time)
4 परमपिता शिव परमात्मा (परमात्मा परिचय) सत्यम शिवम सुंदरम	4. Supreme soul Supreme father Shiva Truth, Benevolent & Beautiful (God introduction)
5 सर्वोच्च सर्वज्ञ सर्वोपरि (परमात्मा पहचान)	5. Highest, All knower, Beyond all (God identity)
6 निराकार ज्योतिबिंदु सद्चिदानंदस्वरूप (परमात्मा स्वरूप)	6. Incorporeal, Point of light, Truth, conscient, Blissful (Form of Supreme Soul)
7 ज्ञानसागर शांतिसागर आनंदसागर (परमात्मा के 3 गुण)	7. Ocean of Knowledge, Peace, Bliss (3 virtues of Supreme soul)
8 अकर्ता असोचता अभोक्ता (परमात्मा के 3 स्वभाव)	8. Non-Doer, Non-Thinker, Non-Enjoyer (3 characteristics of Supreme soul)
9 त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी त्रिलोकीनाथ (परमात्मा के 3 महिमा)	9. 3 Eyed, Knower of 3 time aspects, Master of 3 worlds (3 glories of Supreme soul)
10 स्थापना पालना विनाश (परमात्मा के 3 कर्त्तव्य)	10. Creation, Sustenance, Destruction (3 Acts of Supreme Soul)
11 परमपिता परमशिक्षक परमसदगुरू (परमात्मा से 3 सम्बंध)	11. Supreme Father, Supreme Teacher, Supreme Sat guru (3 relations with God)
12 हीरक युग स्वर्णयुग रजतयुग (परमात्मा द्वारा स्थापित तीन युग)	12. Diamond age, Golden age, Silver age (3 ages established by Supreme soul)
13 ब्राह्मण देवता क्षत्रिय (परमात्मा द्वारा स्थापित तीन धर्म)	13. Brahmin, Deity, Warrior (3 religion established by Supreme soul)
14 ब्रह्मा विष्णु शंकर (3 मुख्य देवताएं)	14. Brahma Vishnu Shankar(3 prime male deity)
15 लक्ष्मी सरस्वती पार्वती (3 मुख्य देवियॉं)	15. Laxmi Saraswati Parvati (3 prime female deity)
16 साकार आकार निराकार (3 लोक)	16. Corporeal Subtle Incorporeal (3 world)

शक्तिशाली 3 शब्द रहस्य	POWERFUL 3 WORD SECRET
17 सुखधाम दुःखधाम शांतिधाम (3 धाम)	17. Abode of Happiness, Abode of Sorrow Abode of Peace (3 Abode)
18. महाराजा राजा प्रजा (3 पद)	18. Emperor, King, Subjects (3 Status)
19 लौकिक अलौकिक पारलौकिक (3 पिता)	19. Wordly, Non-Wordly, Spiritual (3 Father)
20 8, 16000, 108 की माला (विजयी माला)	20. 8, 16000 ,108 rosary (Rosary of Victory)
21 आत्मा बाबा ड्रामा (3 बिंदु स्मृति)	21. Soul, Supreme soul, Drama (3 Point remembrance)
22 अजर अमर अविनाशी (आत्मा स्वभाव)	22. Unborn, Immortal, Imperishable (Soul nature)
23 मन बुद्धि संस्कार (आत्मा की 3 शक्तियॉ)	23. Mind, Intellect, Impressions (3 faculties of the soul)
24 हेल्थ वेल्थ हैपिनेस (स्वर्ग में 3 प्राप्तियॉ)	24. Health, Wealth, Happiness (3 attainments of Heaven)
25 तीन बिंदी स्मृति तिलक विजयी तिलक राज तिलक (3 तिलक)	25. 3 Point remembrance tilak, Victory tilak, Coronation tilak (3 types of tilak)
26 जिम्मेवारी ताज पवित्रता ताज रत्न जड़ित ताज (3 ताज)	26. Responsibility crown, Purity crown, Jewel Crown (3 Crown)
27 अकाल तख्त दिल तख्त राज तख्त (3 तख्त)	27. Immortal throne, Heart throne, Royal throne (3 Throne)
28 भाग्यशाली सौभाग्यशाली पदमभाग्यशाली (3 भाग्य)	28. Fortunate, More fortunate, Multi Million fold fortunate (3 Fortune)
29 सतोगुण रजोगुण तमोगुण (3 गुण)	29. Satoguna, Rajoguna, Tamoguna (3 Qualities)
30 कर्म अकर्म विकर्म (3 प्रकार के कर्म)	30. Karma (bearing results), Akarma (Neutral) Vikarma (Sinful) (3 Types of Karma or Actions)
31 ज्ञान भक्ति वैराग्य (सृष्टि खेल)	31. Knowledge, Devotion, Disinterest (World Play)
32 जिस्मानी विद्या शास्त्र विद्या रूहानी विद्या (3 प्रकार की विद्या)	32. Wordly knowledge, Religious knowledge Spiritual knowledge (3 Knowledge)
33 ब्राह्मण फरिश्ता देवता (3 स्वरूप)	33. Brahmin, Angel, Deity (3 Forms)

34 बालक सो मालक गॉडली स्टूडेन्ट सेवाधारी (अपने 3 स्वरूप की स्मृति)

34. Child the Master, Godly Student, Server (Remembrance of 3 forms of self)

35 दानी महादानी वरदानी (3 प्रकार के दाता) दाता विधाता वरदाता

35. Donors, Great donors, Bestower of blessings
Giver, Giver of fortune , Giver of blessings (3 Types of donors/givers)

36 विश्व सेवाधारी विश्व परिवर्तक विश्व कल्याणकारी (ब्राह्मणों के 3 कर्तव्य)

36. World Server, World Transformer, Word Benefactor (3 duties of Brahmins)

37 आधारमूर्त उद्धारमूर्त उद्धाहरणमूर्त (3 मूर्त)

37. Image of support, Image of upliftment, Image of example (3 Images)

38 तन मन धन (3 सेवाएँ)
मनसा (शक्तिदान) वाचा (ज्ञानदान) कर्मणा (गुणदान)
मनसा में (सफाई) पवित्रता वाचा में (सच्चाई) सत्यता मधुरता
कर्मणा में (अच्छाई) श्रेष्ठता नम्रता संतुष्टता हर्षितमुखता

38. Body, Mind, Wealth (3 Services)
Mind (donate power), Words (donate knowledge) , Deeds (donate virtues)
Purity & Clarity in Thought, Truthfulness & Sweetness in Words & Goodness,Royalty, Humility, Contentment,Cheerfulness in Action.

39 समय श्वास संकल्प (3 खजाने सफल करना)

39. Time, Breath, Thought (3 Treasures to be made worthwhile)

40 अचल अडोल एकरस (अटल) (3 स्थिति)

40. Unshakeable,Immovable,Constant(Stable) (3 Stages)

41 शुभचिंतक शुभभावना शुभकामना (3 वृत्तियॉ दूसरों प्रति)

41. Well-wisher, Good feelings, Pure wishes (3 Attitude towards others)

42 सक्रिय सतर्क सही (नामी एक्टर्स के गुण)

42. Active, Alert, Accurate (3 Qualities of a renowned actor)

43 सच्चाई सफाई सादगी (प्रभुपसंद 3 बातें)

43. Honesty, Clarity, Simplicity (God liking qualities)

44 बाबा मुरली मधुबन (ब्रह्मण जीवन में जरूरी)

44. Baba, Murli, Madhuban (Vital in Brahmin life)

45 वर्सा पढ़ाई वरदान (संगमयुग की 3 प्राप्तियॉ)

45. Inheritance, Study, Blessings (3 attainments of Confluence age)

46 दृष्टि बोली टोली (ब्रह्मणों के 3 अधिकार)

46. Drishti, Boli, Toli (3 Rights of Brahmins)

47 रास रंग नाद (स्वर्ग में ऊर्जा के 3 स्त्रोत)

47. Ras (Dance), Rang (Colour), Naad (Music (3 source of energies in heaven)

48 अमृतवेला योग मुरली क्लास ट्राफिक कण्ट्रोल (ब्राह्मण जीवन के 3 महत्त्वपूर्ण नियम

48. Amritvela yoga, Murli class, Traffic control (3 imp rules for Brahmin life)

शक्तिशाली 3 शब्द रहस्य

POWERFUL 3 WORD SECRET

49 शीर्षक प्रश्न उत्तर मुरली (मुरली के 3 भाग) धारणा वरदान स्लोगन यादप्यार गुडमार्निंग नमस्ते	49. Title, Q&A, Murli (3 part of Murli) Dharna, Blessings, Slogans Love remembrance, Good morning, Namaste
50 मैं आत्मा शान्त स्वरूप परमधाम निवासी शिव परमात्मा पिता की संतान हूँ। (ओम शान्ति के 3 अर्थ)	50. I am a peaceful soul, resident of soul world and child of Supreme God father Shiva (3 meaning of Om Shanti)
51 साकारी आकारी निराकारी (3 ड्रील)	51. Corporeal, Subtle, Incorporeal (3 drill)
52 आलस्य अलबेलापन बहाना (पुरूषार्थ में 3 विघ्न)	52. Laziness, Carelessness, Excuse (3 obstacles in effort making)
53 मनमत परमत श्रीमत (3 मत)	53. Mind dictate, Others dictate, Elevated dictate of God (3 types of dictates)
54 स्वचिंतन परचिंतन प्रभुचिंतन (3 चिंतन)	54. Contemplation about Self, Others, God (3 types of Contemplation)
55 परमत परचिंतन परदर्शन (स्व उन्नति में 3 बाधक)	55. Others dictate, Contemplation about others, Viewing others (3 Obstacles in self-progress)
56 धैर्य शांति प्रेम (स्वस्थ रहने लिए 3 टेबलेट)	56. Patience, Peace, Love (3 Tablet to remain healthy)
57 सहनशक्ति सामाने की शक्ति समेटने की शक्ति निर्णयशक्ति परखने की शक्ति परिवर्तन शक्ति (3 प्रमुख शक्तियों के जोड़े)	57. Power to Tolerate, Power to Accomodate, Power to Packup Power to Judge, Power to Discriminate, Power to Transform (Pair of 3 main Powers)
58 सहनशीलता धैर्यता सन्तुष्टता (3 आवश्यक गुण)	58. Tolerance, Patience, Contentment (3 essential virtues)
59 सत्यता पवित्रता अन्तर्मुखता (3 मूल गुण)	59. Truth, Purity, Introvertness (3 basic virtues)
60 दृढ़ता स्थिरता सन्तुष्टता (सभी गुणों में मुख्य)	60. Determination, Stability, Contentment (Prime amongst virtues)
61 राजयुक्त योगयुक्त युक्तियुक्त (ज्ञानी आत्मा की 3 निशानी)	61. Raazyukt (understanding knowledge secret), Yogyukt (endowed in yoga), Yuktiyukt (Tactful) (3 Signs of a Knowledgeable soul)
62 स्व द्वारा संतुष्ट बाप द्वारा संतुष्ट ब्राह्मण परिवार द्वारा संतुष्ट (संतुष्टता के 3 सर्टीफिकेट)	62. Contentment through Self, God & Brahmin Family (3 Certificates of Contentment)
63 प्रालब्ध का खाता (स्व पुरूषार्थ द्वारा) पुण्य का खाता (सेवा द्वारा) दुआओं का खाता (अनेकों को सुख देकर) (3 प्रकार का खाता)	63. Destiny account (thr' self-effort), Merit account (thr' service), Blessing account (by giving happiness) (3 types of Account)

शक्तिशाली 3 शब्द रहस्य

POWERFUL 3 WORD SECRET

64 श्रीमत समर्पण सेवा (एवररेडी व बापसमान बनने लिए 3 बातें)

65 निराकारी अलंकारी कल्याणकारी (श्रेष्ठ स्थिति बनाने का साधन)

66 अचानक एवररेडी बहुतकाल का अभ्यास
बिन्दू बनना बिन्दू देखना बिन्दू लगाना
(तीव्र पुरूषार्थ के लिए 3 स्मृतियॉ)

67 मैं कौन मेरा कौन मुझे क्या करना है
(3 बुनियादी प्रश्न)

68 आज्ञाकारी वफादार ईमानदार (3 मुख्य धारणायें)

69 रूहानियत रूहाब रहमदिल (सम्पूर्ण स्टेज बनाने लिए 3 बातें)

70 निराकार रूह को देखना कर्मेंद्रिय पर विजय
विकल्पों पर विजय (3 सीढ़ी पास करना है)

71 प्यार निश्चय सहयोग (संगठन वा परिवार को मजबूत बनाने व आगे बढ़ाने के लिए 3 बातें)

72 स्वमान सदा हॉजी बाप में संपूर्ण निश्चय व सर्व संबंध (मम्मा की 3 विशेषताएँ)

73 गुणवान बनना गुण देखना गुणदान करना
(मम्मा इन 3 बातों में पक्की थी)

74 निमित्त निर्माण निर्मलवाणी (दादी के 3 मुख्य
संपन्न संतुष्ट संपूर्ण पवित्र स्लोगन)

75 निराकारी निर्विकारी निरहंकारी
निर्विघ्न निर्विकल्प नवनिर्माणधारी
(3 मुख्य वरदान)

76 मेरा बाबा प्यारा बाबा मीठा बाबा (बाबा के प्यार में 3 शब्द)

ओम शान्ति

64. Elevated dictates, Surrender, Service
(3 things to become Ever ready & Equal to father)

65. Incorporeal, Ornamental, Benefactor
(3 Means to make an elevated stage)

66. Sudden, Ever ready, Long time practice
Become point, See point, Put point
(3 points to remember for intense effort)

67. Who am I, Who is mine, What I have to do (3 Basic Questions)

68. Obedient, Trustful, Honest (3 main Disciplines)

69. Spirituality, Spiritual intoxication, Merciful (3 things to make Complete stage)

70. Seeing formless soul, Control over organs, Control over thoughts (3 Steps to pass)

71. Love, Faith, Co-operation (3 things to strengthen and enhance an organization or a family)

72. Self-respect, Ever Haji or Positive, Full faith in God father& all relations with him
(3 Specialities of Mamma)

73. Becoming Virtuous Seeing Virtues Donating virtues (Mamma was firm in 3 things)

74. Instrument, Constructive, Pure words
Full, Content, Complete Pure
(3 main slogans of Dadi)

75. Incorporeal, Vice less, Egoless
Obstacle free, Thoughtless, Innovator
(3 main blessings)

76. Mine Baba, Lovely Baba, Sweet Baba
(3 loveful words for Baba)

Om shanti

ज्ञान सार – साकार अव्यक्त मुरलियों से

1. अच्छा बहुत सुनाने से क्या फायदा। बाप कहते हैं **मनमनाभव**। कितना तरावटी माल खिलाते हैं।

2. यहाँ तो जास्ती कुछ पढ़ने की बात ही नहीं। इनकी तो बात ही **एक** है। **एक ही महामंत्र** देते हैं – **मनमनाभव का**। यह पढ़ाई है ही **इशारे** की।

3. बाबा सब कुछ समझाये फिर बच्चों को कहते हैं – **मामेकम याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जाए** ।

4. बच्चों को कितना सुनाए कितना सुनाऊँ । **मुख्य बात** है – **अल्फ** ।

5. इस **पढ़ाई का सार** है – **वाणी से परे जाना** । **दुनिया की सब बातों को छोड़ दो**।

6. सारे **पढ़ाई अथवा ज्ञान का सार** है – **आना और जाना** । यही **ज्ञान और योग** है ।

7. कितना समझाकर कितना समझायें । बस सिर्फ **मुझे याद करो** और **मेरे वर्से को याद करो**

8. **बाप की याद** – यह है **पढ़ाई का तंत** (सार)

9. ज्ञान के सभी **प्वाइंट्स का सार** है — **प्वाइंट अर्थात बिंदी बनना**। **ज्ञान का सार एक बिंदू शब्द** में समाया हुआ है । ज्ञान की **एक बूँद** है – **अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो** । इसी एक बूँद से **मुक्ति –जीवन मुक्ति** प्राप्त हो सकती है। ।

10. बाप बड़े ते बड़ी पढ़ाई **दो अक्षर** मे पढ़ाते हैं । **अल्फ और बे** – इन्हीं **दो शब्दों** में तुम्हारी सारी पढ़ाई है । **अल्फ** (मुक्तिधाम) और **बे** (जीवन मुक्तिधाम वा चक्र का राज)। **अल्फ** को जानने से **बे** को जान ही लेंगे।

11 इस ज्ञान की मुख्य **दो सब्जेक्ट** है **"अल्फ और बे" बाप को याद करो** और **स्वदर्शन चक्रधारी बनो** तो तुम **एवरहेल्दी वेल्दी** बनेंगे। मुझे **याद** करने से तुम **घर चले जायेंगे**। **स्वदर्शन चक्रधारी** बनने से तुम **चक्रवर्ती राजा बनेंगे**।

12. बाबा सिर्फ **"अल्फ और बे"** पढ़ाते हैं। **" मनमनाभव और मध्याजी भव"** बस। पढ़ाई भी कितनी **सहज** है बस **दिल पर यह लिख दो**।

13. **बीज व झाड़** को याद करने से **सारा ज्ञान** आ जाता है। **बीज़** को याद करने से **सारा झाड़** याद आ जाता है।

14. सारे ज्ञान का सार है **स्मृति** ।यही चारों सब्जेक्ट्स का **अधार** है।सारे ड्रामा का खेल है ही **विस्मृति और स्मृति** का।**स्वयं की स्मृति, परमात्मा बाप की स्मृति** और **ड्रामा के नालेज की स्मृति**। इन्हीं **तीनों स्मृतियों** में सारे ज्ञान का विस्तार समाया हुआ है।जैसे वृक्ष का पहले बीज होता है।फिर वृक्ष का विस्तार होता है।ऐसे मुख्य है **बीज बाप** की स्मृति फिर **दो पत्ते** अर्थात **आत्मा और ड्रामा** की सारी नॉलेज। इन तीन स्मृतियों को धारण करने वाले **स्मृति भव** वा **सम्पूर्ण विजयी भव** के वरदानी बन जाते हैं।

15. बाप ने बच्चों को **हेल और हेविन** का **राज** समझाया है। यह है **रिटेल**। **होलसेल** में तो सिर्फ **एक अक्षर** कहते हैं **मामेकम् याद करो**।इतना ज्ञान सुनाते हैं जो सागर को स्याही बनाओ तो भी अंत न आये यह हुआ **रिटेल**।**होलसेल** में सिर्फ कहते हैं **मन्मनाभव**।**अक्षर ही एक है**।सब बातें होलसेल और रिटेल में समझाकर फिर अंत में कह देते हैं **मन्मनाभव मध्याजीभव**।**मनमनाभव में सब आ जाता है**। यह बहुत **भारी खजाना** है।

16. बाप सिर्फ **तीन अक्षर** याद करने को कहते हैं।वास्तव में है **एक अक्षर बाप को याद करो** बाप को याद करने से **सुखधाम (सुख) और शांतिधाम (शांति)** दोनों वर्से याद आ जाते हैं।मुख्य बात है **बाप और वर्से** को याद करना **नटशेल** में यह **काफी** है।

17. **दो शब्दों** की पढ़ाई है **"आप और बाप"**। इन्हीं दो शब्दों में **चक्कर** कहो **ड्रामा** कहो **कल्पवृक्ष** कहो सारी नॉलेज समाई हुई है।

18. सिर्फ एक ही **सहज बात** तो याद करनी है **हम बाप के और बाप हमारा**। इस एक बात में सब **समाया** हुआ है। **यह है बीज**।बीज को पकड़ना तो सहज होता है ना।वृक्ष के विस्तार को पकड़ना मुश्किल होता है।

19. और पढ़ाई में तो कितना दिमाग पर **बोझ** पड़ता है ।बाप की पढ़ाई से दिमाग **हल्का** बन जाता है। सब्जेक्ट तो **एक** ही है।सिर्फ **मन्मनाभव मध्याजीभव, अल्फ और बे, याद और ज्ञान** ।

20. **पूज्य और पुजारी** इन **दो शब्दों** में सारे **ड्रामा का राज़** आ जाता है।जब तुम पूज्य हो तब **पुरूषोत्तम** हो फिर **मध्यम कनिष्ठ** बनते हो।माया पूज्य से पुजारी बना देती है।

21 सिर्फ **"एक" शब्द** भी याद रखो तो उसमें **सारा ज्ञान** आ जाता है **स्मृति** भी आ जाती **सम्बन्ध** भी आ जाता **स्थिति** भी आ जाती ।और साथ साथ जो **प्राप्ति** होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती।**एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद** का ही मिलता है।**प्राप्ति भी जो होती है वह एकरस रहती है**।

22. **" मैं कौन हूँ "** इस **एक शब्द** के उत्तर में सारा ज्ञान समाया हुआ है।यह एक शब्द ही **खुशी के** खजाने **सर्व शक्तियों के** खजाने **ज्ञानधन के खजाने श्वास और समय के** खजाने की **चाबी** है ।

23. सभी **प्वाइंट्स का सार** है - **सभी को सार में समाए बिंदु बन जाओ**।यह अभ्यास निरंतर रहता है ? कोई भी कर्म करते हुए यह स्मृति रहती है कि **मैं ज्योतिबिंदु इन कर्मेंद्रिय द्वारा यह कर्म कराने वाला हूँ**। यह **पहला पाठ** स्वरूप में लाया है।**आदि भी यही है और अंत में भी** इसी स्वरूप में स्थित हो जाना है।

24. जीवन के हर कर्म में **दो शब्द** काम में आते हैं चाहे **ज्ञान** में चाहे **अज्ञान** में।**" मैं और मेरा"** इन दो शब्दों में **ज्ञान का भी सार** है। **मैं ज्योतिबिंदु वा श्रेष्ठ आत्मा हूँ। मेरा एक बाप दूसरा न कोई**।**" मेरा बाबा"** इसमें **सब** आ जाता है।

25. यह हुआ **विस्तार** में समझाना।**नटशेल** में कहते हैं कि **मुझे याद करो।बस गॉड इज वन। बाकी सब हैं बच्चे।**

26. गॉद फादर तुम्हें इतना ही पढ़ाता है कि **हे आत्मायें शरीर का भान छोड़ो और मुझे याद करो**। यहा **दो शब्दों** की पढ़ाई इसलिए पढ़ाई जाती है क्योंकि **अब तुम्हें इस पुरानी दुनिया पुराना खाल (शरीर) नहीं लेना है।तुम्हें नयी दुनिया में जाना है**।

27. बाप कहते मैं तुम्हें **फिर से राजयोग सिखलाकर राजाओं का राजा बनाता हूँ**। इस **"फिर से"**शब्द में ही **सारा चक्र** समाया हुआ है।

28. **अपना भी ज्योति स्वरूप, बाप भी ज्योति और घर भी ज्योति तत्व है**।तो सिर्फ **"ज्योति"** शब्द भी याद रखो तो **सारा ज्ञान** आ जाता है।यही एक **"ज्योति शब्द"** की सौगात ले जाना तो सहज ही **विघ्न विनाशक** हो जायेंगे।

29. बरोबर हम **बाजोली** खेलते हैं। **हम सो ब्राह्मण** फिर **हम सो देवता**। **"सो" अक्षर** जरूर लगाना है सिर्फ **हम** नहीं। **हम सो शुद्र थे हम सो ब्राह्मण बने** यह बाजोली बिल्कुल सहज है। यह बाजोली का खेल **बुढ़ो को** तो **बच्चों को** भी याद रहनी चाहिए। इसमें **सारे चक्र** का **ब्रह्मा और ब्राह्मणों** का राज़ समाया हुआ है।

30. सारी **पढ़ाई व शिक्षाओं का सार** यह **तीन शब्द** है। **कर्म बंधन तोड़ने हैं, अपने संस्कार स्वभाव मोड़ना है, एक बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ने हैं।** यही **तीन शब्द** सम्पूर्ण विजयी बना देंगे। इसके लिए **सदा स्मृति** रहे कि जो भी इन नयनों से विनाशी चीज़े देखते है वह सब विनाश हुई पड़ी है। उन्हें देखते भी अपने **नये सम्बन्ध नई सृष्टि** को देखते रहो तो कभी हार हो नहीं सकती।

31. सारे **ज्ञान का** व इस **पढ़ाई के चारों ही सब्जेक्ट** का **मूल सार** यही एक बात **" बेहद "** है। **बेहद शब्द के स्वरूप में स्थित होना** यही **फर्स्ट और लास्ट** का पुरूषार्थ है। जब सर्व हदों से पार **बेहद स्वरूप में बेहद घर में बेहद के सेवाधारी** सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले **विजयी रत्न** बन जाते हैं तब ही अंतिम **कर्मातीत स्वरूप** का अनुभव स्वरूप बन जाते। **हद है अनेक बेहद है एक।** अनेक प्रकार की हदें अर्थात अनेक **" मेरा मेरा "**। **एक मेरा बाबा दूसरा न कोई** इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा जाता है। **विस्तार सार स्वरूप** बन जाता है। विस्तार मुश्किल या सार मुश्किल होता है ? तो **आदि से अंत का पाठ क्या हुआ ? बेहद**

32. अगर एक एक के **84** जन्मों का वृतान्त बैठ निकालें तो पता नहीं कितना हो जाए। बाप कहते हैं इन सब बातों को छोड़ **मामेकम् याद करो**। थोड़ा विस्तार से कभी समझाया जाता है तो मनुष्यों का संशय मिट जाए। बाकी बात तो **थोड़ी** है **मुझे याद करो जिससे तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और ईश्वर के पास जायेंगे।**

33. कथा भी वास्तव में बड़ी नहीं है। असुल है **मनमनाभव। बस बीज को याद करो ड्रामा के चक्र को याद करो**। इसमें **बाप भी** आ गया **पढ़ाई और पढ़ाने वाला भी** आ गया **सद्गति दाता** भी आ गया।

34. **मनमनाभव मध्याजीभव** इनमें सारा ज्ञान आ जाता है। निमंत्रण देते हैं। दिन प्रतिदिन बहुत शॉट बनाना होता है। पिछाड़ी में शार्ट होता जायेगा। **मनमनाभव बाप को याद करो और उनसे वर्सा लो।**

35. भल **झाड़ की डिटेल** भी समझाते रहते हैं फिर **पिछाड़ी में कहते हैं अल्फ को याद करो दूसरा न कोई**। **होलसेल** माना **मनमनाभव**। **अक्षर ही दो** है **"मन्मनाभव"**। इसमें सब आ जाता है। **होलसेल अर्थात** एक सेकण्ड में ऐसी समझानी देते हैं जो सतयुग आदि से लेकर अन्त तक मालूम पड़ जाता है कि कैसे हमारा पार्ट नूंधा हुआ है।

36. **अपने को आत्मा समझना है और बाप को याद करना** यह **श्रीमत** है मुख्य। बाकी है डीटेल। बीज कितना छोटा है बाकी झाड़ का विस्तार है। जैसे बीज में सारा झाड़ समाया हुआ है वैसे **यह सारा ज्ञान भी बीज में समाय हुआ है**।

37. अपने को अगर **मेहमान** समझकर चलेंगे तो अपनी भी **6 बातें** सदा स्मृति में रहेगी।

1 नाम ः सर्वोत्त्म ब्राह्मण **2 रूप** ः शालिग्राम **3 समय** ः संगमयुग

4 घर ः परमधाम **5 कर्त्तव्य** ः विश्वकल्याणकारी **6 वर्सा** ः स्वर्ग की बादशाही

सारे ज्ञान का सार **6 शब्दों** में बुद्धि में आने से सारा ज्ञान **रिवाइज** हो जाता है। आप के हर **कर्म और बोल** में सारे ज्ञान का **सार** होना चाहिए। वह तब होगा जब सारे ज्ञान का सार **बुद्धि** में होगा। अगर नशा नहीं तो निशाना भी नहीं लग सकता।

38. पढ़ाई का **मूल लक्ष्य** है **देह अभिमान से न्यारे हो देही अभिमानी बनना**। इस देह अभिमान से न्यारे अथवा मुक्त होने की विधि ही है **सदा स्वमान में स्थित रहना**। जो **स्वमान** में स्थित रहता है उन्हें स्वतः **मान** प्राप्त होता है। सदा स्वमान में रहने वाले ही **विश्व महाराजन** बनते हैं और विश्व उन्हें **सम्मान** देती है।

39. **स्वमान एक शब्द** प्रैक्टिकल जीवन में धारण हो जाये तो सहज ही **सम्पूर्णता** को पा सकते हैं। स्वमान में स्थित होने से स्वतः ही **सर्व प्रति स्व की भावना व शुभ कामना** हो जायेगी। यह **स्वमान में** स्थित होना **पहला पाठ** है।

40. **ज्ञान योग धारणा और सेवा** इन **चारों सब्जेक्ट का सार दो शब्द** है **"संसार और संस्कार"**। **एक बाप ही मेरा संसार है दूसरा हर गुण हर शक्ति मेरा निजी संस्कार है**।

41. **"आना और जाना"** यह **पढ़ाई का सार** तथा **"स्मृति"** और **" मैं और मेरा बाबा"** यह **ज्ञान का सार**

42. पहले पहले आने से यही बाप द्वारा **दो वरदान** मिले हैं **"योगी भव"** और **"पवित्र भव"**। दुनिया वालों को भी एक **सेकण्ड** में इतने वर्षों के **ज्ञान का सार** इन ही शब्दों में सुनाती हो ना। **पुरूषार्थ का लक्ष्य वा प्राप्ति** भी यही है ना वा **सम्पूर्ण स्टेज वा सिद्धि की प्राप्ति** तो यही होती है।

43. आगे तो सिर्फ **गाते** थे उनका **यथार्थ अर्थ** अभी बाप बैठ समझाते हैं। सभी **वेद शास्त्र जप तप स्लोगन** आदि जो भी है **सब का सार** बाप बैठ समझाते हैं।

44. सारे **ज्ञान का सार** है कि अब **हमको वापिस घर जाना** है। **यह छी छी दुनिया है इसको छोड़ हमें अपने घर चलना है**। अगर यह याद रहे तो भी **मनमनाभव** हुआ।

45. इतनी सब प्वाइंट्स तो बुद्धि में याद रह न सके । **तन्त (सार)** बुद्धि में रह जाता है । पिछाड़ी में **तन्त** हो जाता है **मन्मनाभव** ।

46. **गीता में** भी शुरूआत में और अंत में **"मन्मनाभव"** और **"मध्याजीभव"** कहा है। गीता का **पहला पाठ "अशरीरी आत्मा बनो"** और **अंतिम पाठ "नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनो"** **पहला पाठ - विधि** और **अंतिम पाठ – विधि से सिद्धि**

सार को अपने में समा लिया तो सार युक्त हो जायेंगे और असार संसार से बेहद के वैरागी बन जायेंगे